अमर उजाला

# प्रवाह

निर्भीक पत्रकारिता का आठवां दशक
स्थापना वर्ष : 1948

नई दिल्ली ■ शनिवार, 6 अप्रैल 2019

सकारात्मक होना और कृतज्ञ रवैया अपनाना यह सुनिश्चित करना है कि आप कैसे जी रहे हैं..
...जोएल ऑस्टीन, *अमेरिकी पादरी, लेखक*

**हाल के दौर में दिवालियेपन के कई मामलों के बीच वीडियोकॉन समूह के दिवालिया होने का खुलासा भारतीय बैंकिंग के इतिहास में कॉरपोरेट दिवालियेपन का सबसे बड़ा मामला हो सकता है, जो व्यवस्था के भीतर साठगांठ के बारे में बताता है।**

# और अब वीडियोकॉन

वेणुगोपाल धूत के नेतृत्व वाले वीडियोकॉन समूह ने करीब 90,000 करोड़ रुपये की देनदारी न चुका पाने का हाल ही में जो खुलासा किया है, वह घोटाला करके विदेश भागने और दिवालियेपन की कई घटनाओं के बीच एक और बड़ा झटका तो है ही, भारतीय बैंकिंग के इतिहास में कॉरपोरेट दिवालियेपन का सबसे बड़ा मामला भी हो सकता है। समूह की दो प्रमुख कंपनियों में से वीआईएल (वीडियोकॉन इंडस्ट्रीज लिमिटेड) पर करीब 59,451 करोड़ रुपये का, तो वीटीएल (वीडियोकॉन टेलीकम्युनिकेशंस लिमिटेड) पर लगभग 26,673 करोड़ रुपये का कर्ज है। सार्वजनिक और निजी बैंकों के अलावा दूसरे स्रोतों से भी इस समूह ने कर्ज लिए हैं। दिलचस्प यह है कि समूह के तीन प्रमोटरों ने भी मुहैया कराई गई निजी गारंटी पर 57,823 करोड़ रुपये का दावा ठोका है, जिनकी जांच की जा रही है। यह संयोग ही है कि वीडियोकॉन समूह के दिवालिया होने की बात रिजर्व बैंक द्वारा डिफॉल्टर कंपनियों के खिलाफ शुरू की जा रही कार्रवाई को सर्वोच्च न्यायालय द्वारा रोक दिए जाने के बीच आई है। इससे फौरी तौर पर बेशक कुछ गलतफहमी पैदा हुई, पर यह स्पष्ट है कि सरकार की हरी झंडी मिलने पर केंद्रीय बैंक उन कंपनियों के खिलाफ कार्रवाई कर सकता है। स्टेट बैंक ने पिछले वर्ष ही वीडियोकॉन समूह की सच्चाई सामने आने के बाद इसे नेशनल लॉ ट्रिब्यूनल को भेज दिया था और इनसॉल्वेंसी और बैंकरप्सी कानून के तहत कंपनी के निदेशक मंडल को सस्पेंड कर दिया था। वीडियोकॉन को कर्ज देने के मामले में भी विगत जनवरी में सीबीआई ने आईसीआईसीआई बैंक की पूर्व एमडी और सीईओ चंदा कोचर, उनके पति दीपक कोचर, वीडियोकॉन समूह के प्रमोटर वेणुगोपाल धूत और अन्य लोगों के खिलाफ एफआईआर दर्ज की थी। इन पर कर्ज में घोटाला करने, आपराधिक साजिश और धोखाधड़ी के आरोप लगे हैं, जो व्यवस्था के भीतर साठगांठ के बारे में बताते हैं। इनसॉल्वेंसी और बैंकरप्सी कानून के आने के बाद यह देश में निजी कंपनी के दिवालिया होने का सबसे बड़ा मामला होगा, जिसका असर कॉरपोरेट और बैंकिंग क्षेत्र पर पड़ना तय है। दिवालिया होने की एक और घटना हमारी अर्थव्यवस्था की बदहाली के बारे में तो बताती ही है, हमारे नीति-नियंताओं को अब बैंकों और कॉरपोरेट सेक्टर को फलने-फूलने देने के लिए दूरदर्शी नीति और योजना के साथ आना होगा।

# कैसे करें न्याय?

**न्याय को मनरेगा के पूरक के रूप में देखा जाना चाहिए : जो लोग काम कर सकते हैं, उन्हें मनरेगा के माध्यम से काम मिल सकता है और जो काम नहीं कर सकते हैं (बुजुर्ग, दिव्यांग व्यक्ति, गर्भवती महिलाएं आदि), वे न्याय के माध्यम से नकद सहायता प्राप्त कर सकते हैं।**

कांग्रेस द्वारा घोषित न्यूनतम आय योजना (न्याय) का दो वजहों से स्वागत किया जाना चाहिए। एक तो इसलिए कि इसके जरिये लोकसभा चुनाव से पहले महत्वपूर्ण मुद्दों पर लंबित चर्चा की पहल की गई है और दूसरा इसलिए कि यह घोषणा गरीबों पर ध्यान केंद्रित करती है।

लेकिन इस घोषणा पर कई प्रश्न भी उठ रहे हैं और इसमें कई खामियां भी हैं। एक, जो नकद हस्तांतरण की घोषणा की गई है, उस पर जीडीपी का दो फीसदी खर्च होने की संभावना है। इसके लिए या तो सरकार को अधिक कर राजस्व जुटाना होगा या (और यह बहुत चिंता की बात है) मौजूदा सब्सिडी या सामाजिक समर्थन में कटौती करनी होगी। इसके संकेत पहले से ही मीडिया में आ रहे हैं। हालांकि अब तक की घोषणाओं में इस बात पर जोर दिया गया है कि सक्षम वर्ग के लोगों की सब्सिडी में कटौती होगी। इसके अलावा, सामाजिक समर्थन के अन्य रूपों के विलय की भी बात है। इससे यह खतरा पैदा होता है कि 'न्याय' एक हाथ से लेगा, तो दूसरे हाथ से (न्यूनतम आय) देगा भी।

**रीतिका खेड़ा**

कर की दृष्टि से, तुलनात्मक रूप से, आयकर आधार और कर दर के संदर्भ में, दोनों में सुधार की गुंजाइश है। भारत थोड़ा पिछड़ गया है। इसके अलावा, भारत में संपत्ति या विरासत कर नहीं है, जो राजस्व जुटाने में महत्वपूर्ण योगदान दे सकता है। सामाजिक खर्च का व्यय भी, भारत में अंतरराष्ट्रीय स्तर की तुलना में निम्न रहा है।

इस योजना के समर्थकों और विरोध करने वालों ने एक समस्या पर जोर दिया है। समस्या यह है कि सबसे गरीब 20 प्रतिशत परिवारों का चयन कैसे किया जाएगा? 'बीपीएल' चयन के अनुभव को भारत में विफलता के रूप में स्वीकार किया गया है। इस कारण इस तरह के दृष्टिकोण से अधिक व्यापक उपाय अपनाए गए हैं : मनरेगा आत्म-चयन पर निर्भर करता है, सार्वजनिक वितरण प्रणाली (पीडीएस) 'बहिष्करण दृष्टिकोण' (जो सक्षम हैं, उनके अलावा सभी) का उपयोग करती है और दो-तिहाई ग्रामीणों को लाभ प्रदान करती है। और मध्याह्न भोजन सब बच्चों को प्राप्त है।

एक तीसरी चिंता महंगाई और इस आशंका से संबंधित है कि हस्तांतरण का मूल्य समय के साथ मिट जाएगा। मिसाल के तौर पर, बुजुर्गों की पेंशन में केंद्र सरकार का योगदान 2006 के बाद से 200 रुपये प्रति व्यक्ति मासिक पर अटक गया है। इसे महंगाई से जोड़ा भी गया है, लेकिन सिर्फ नाम मात्र के लिए। झारखंड में मनरेगा मजदूरी में केवल एक रुपये प्रति दिन की वृद्धि हुई है! नकद हस्तांतरण कार्यक्रम केवल मुद्रास्फीति के साथ तालमेल बिठाने पर ही समझ में आता है।

इन सब चिंताओं और सवालों को मन में रखते हुए, एक विकल्प फिर भी मुमकिन है। यदि हम मनरेगा को उन लोगों के लिए सामाजिक समर्थन के रूप में देखें, जो काम करने में समर्थ हैं और 'न्याय' को उन लोगों पर केंद्रित करें, जो काम नहीं कर सकते, या जिन्हें काम नहीं करना चाहिए, तो बेहतर रहेगा। मेरा इशारा बूढ़ों, दिव्यांगों, विधवाओं, एकल महिलाओं और गर्भवती महिलाओं की ओर है।

ये सब लोग किसी-न-किसी हद तक काम करने में असमर्थ हैं। सबसे गरीब तबके के होने की वजह से इनका देश की संपत्ति पर पहला हक होना चाहिए। यह जनसंख्या का एक ऐसा हिस्सा है, जिसे चिह्नित करने में गलतियां होने की आशंका कम है। हो सकता है कि कुछ लोग अपनी उम्र गलत बता दें, लेकिन यदि कोई देख नहीं सकता, या कोई स्त्री गर्भ से है, तो इसके बारे में झूठ बोलना आसान नहीं। इस तरह से सबसे गरीब बीस फीसदी को परिवारों चिह्नित करने की समस्या का समाधान किया जा सकता है, यदि इन समूहों के सभी लोगों को न्यूनतम आय का हकदार बनाया जाए।

इस योजना को लागू करने में एक मददगार बात यह भी है कि केंद्र सरकार पहले से ही, बूढ़ों, दिव्यांगों और एकल महिलाओं (जिनमें विधवा भी शामिल हैं) के लिए पेंशन योजना चलाती है-राष्ट्रीय सामाजिक सहायता कार्यक्रम (एनएसएपी), लेकिन यह योजना यूनिवर्सल (सार्वभौमिक) नहीं है। इसका दायरा (कवरेज और पेंशन राशि) बढ़ाने की आवश्यकता है। पेंशन योजना के तहत वर्तमान में अपमानजनक ढंग से राशि प्रदान की जाती है-उनके लिए केंद्रीय योगदान 200 रुपये से 1,000 प्रति व्यक्ति प्रति माह के बीच है। एनएसएपी को सार्वभौमिक बनाने की आवश्यकता है, ताकि सभी बुजुर्ग, एकल महिलाएं और दिव्यांग व्यक्ति कवर किए जा सकें।

मातृत्व पात्रता एक और नकद हस्तांतरण कार्यक्रम है, जिसे राजनीतिक समर्थन की आवश्यकता है। वर्ष 2013 में राष्ट्रीय खाद्य सुरक्षा अधिनियम (एनएफएसए) में असंगठित वर्ग की सभी महिलाओं के लिए 6,000 रुपये प्रति गर्भावस्था में दिए जाने का प्रावधान था।

चार साल बाद, 2017 में, जब पीएमएमवीवाई योजना को अंतिम रूप से तैयार किया गया, तो इसके वैधानिक प्रावधानों को कमजोर कर दिया गया था। समर्थन राशि को घटाकर 5,000 रुपये कर दिया गया था और इसे केवल पहली गर्भावस्था तक सीमित कर दिया गया था। कर्नाटक और तमिलनाडु जैसे राज्यों में मातृत्व हक के तहत अधिक राशि (12,000-18,000 रुपये) दी जाती है। फिर भी, यह संगठित क्षेत्र की महिलाओं की तुलना में (जहां छह महीने का वेतन दिया जाता है) से काफी काम है।

पूर्वानुमान है कि 1,000 रुपये प्रति व्यक्ति प्रति माह सार्वभौमिक पेंशन के रूप में दी जाए और मातृत्व पात्रता में एक साथ 6,000 रुपये प्रति बच्चा खर्च हो, तो इन पर जीडीपी का लगभग एक फीसदी खर्च होगा। यह खर्च उतना ही है, जितना अनुमान कांग्रेस के वक्ताओं ने न्याय योजना पर बताया है। बूढ़ों, एकल महिलाओं और दिव्यांग लोगों के लिए यूनिवर्सल पेंशन के रूप में इसके द्वारा वास्तव में न्याय होने की उम्मीद है।

# नई भूमिका के लिए पूरी तरह से तैयार

**अपनी कहानी**

>> मयूरी कांगो

***मैंने बचपन में अपनी मां को संवाद याद करते देखा और मुझे हमेशा लगा कि अभिनय मेरे खून में है। अभिनय से मेरा गहरा नाता रहा है, लेकिन मैं अभी गूगल इंडिया की इंडस्ट्री प्रमुख की अपनी नई भूमिका को लेकर बहुत उत्साहित हूं।***

**मैं** मूलतः महाराष्ट्र के औरंगाबाद की रहने वाली हूं। मेरा जन्म इसी शहर में हुआ। हमारे घर का माहौल जरा रचनात्मक और राजनीतिक किस्म का रहा है। मेरे पिता डॉ भालचंद्र कांगो एक कम्युनिस्ट नेता हैं और मेरी मां सुजाता रंगमंच की मशहूर अदाकारा हैं और टीवी में भी सक्रिय रही हैं। मैंने औरंगाबाद के सेंट जेवियर्स स्कूल से पढ़ाई की और मैं पढ़ाई में काफी अच्छी थी। 1994-95 की बात है, जब मैं बारहवीं बोर्ड परीक्षा की तैयारी कर रही थी, तभी मेरे पास फिल्म में काम करने का पहला अवसर आया। दरअसल हुआ कुछ यूं था कि मैं मां से मिलने के लिए मुंबई गई हुई थी और वहीं मेरी मुलाकात निर्देशक सईद अख्तर मिर्जा से हुई, जो उन दिनों बाबरी मस्जिद विध्वंस पर *नसीम* (1995) नामक फिल्म बना रहे थे। उन्होंने मुझे एक पंद्रह वर्ष की लड़की की भूमिका की पेशकश की। पहले तो मैंने परीक्षा की वजह से मना किया, मगर फिर मैं तैयार हो गई और इस तरह से मेरा फिल्मी सफर शुरू हुआ।

### *फिल्मों के लिए आईआईटी का मोह छोड़ा*

बारहवीं की परीक्षा के बाद मैंने आईआईटी-जेईई की परीक्षा दी और उसमें सफल हो गई। मेरा चयन आईआईटी, कानपुर के लिए हो गया। एक मध्यवर्गीय परिवार के लिए इससे अधिक खुशी की क्या बात हो सकती थी। मगर मुझे लगा कि इंजीनियरिंग की पढ़ाई की वजह से फिल्म का मेरा करियर प्रभावित होगा, सो मैंने आईआईटी जाने का इरादा त्याग दिया और औरंगाबाद के एक कॉलेज में दाखिला ले लिया। असल में *नसीम* को राष्ट्रीय फिल्म पुरस्कार मिला और मेरे काम को काफी सराहा गया। इस फिल्म में मेरे काम से खुश होकर महेश भट्ट ने अपनी फिल्म *पापा कहते हैं* (1995) में नायिका की भूमिका दे दी और वह फिल्म व्यावसायिक रूप से तो खास सफल नहीं हुई, मगर मेरी भूमिका को काफी सराहा गया।

### *मां के साथ-साथ*

मेरी मां थियेटर से जुड़ी हुई हैं और उनकी वजह से ही मैं फिल्मों में आ सकी। ऐसा लगता है कि अभिनय मेरे खून में है। बचपन से मैंने मां को थियेटर करते देखा। मुझे याद है कि जब मैं तीन वर्ष की थी और मां अपने नाटकों के संवाद याद कर रही होती थीं, तो मैं भी उनके संवाद याद कर लेती थी। तबसे मैं सोचने लगी थी कि बड़ी होकर मैं भी ऐक्टिंग करूंगी। मां के नाटक में जब भी किसी छोटे बच्चे की जरूरत होती थी, मुझे खड़ा कर दिया जाता था। मेरी पहली फिल्म *नसीम* में भी हम दोनों ने काम किया।

### *गूगल में बड़ी भूमिका*

अनेक फिल्मों और टीवी धारावाहिकों में काम करने के बाद मेरे जीवन में 28 दिसंबर, 2003 को एक बड़ा बदलाव आया, जब आदित्य ढिल्लन के साथ मेरी शादी हुई। शादी के बाद मैं अमेरिका चली गई और वहां मैंने अपनी पढ़ाई का सिलसिला फिर शुरू कर दिया। मैंने मार्केटिंग और फाइनेंस में यूनिवर्सिटी न्यूयॉर्क के जिकलिन स्कूल से एमबीए किया। इस तरह से मैंने एक नई शुरुआत की। गूगल इंडिया की इंडस्ट्री प्रमुख बनने से पहले मैं एक फ्रेंच समूह पब्लिसिस से जुड़ी डिजिटल मीडिया एजेंसी में प्रबंध निदेशक के रूप में काम कर रही थी। मैं गूगल में अपनी नई भूमिका को लेकर बेहद उत्साहित हूं।

*-विभिन्न साक्षात्कारों पर आधारित*

**फैक्ट फाइल**

## 5 जी नेटवर्क

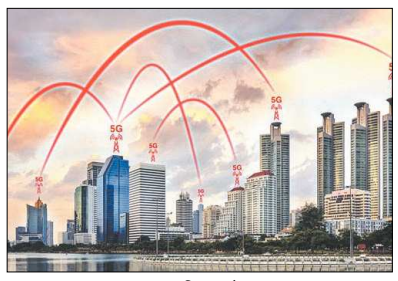

>> व्यावसायिक सेवा शुरू

***5 जी मोबाइल इंटरनेट कनेक्टिविटी तकनीक की पांचवीं पीढ़ी है।***

अमेरिका और दक्षिण कोरिया ने व्यावसायिक 5 जी सेवा की शुरुआत की है। 5 जी नेटवर्क मोबाइल इंटरनेट कनेक्टिविटी तकनीक की पांचवीं पीढ़ी है, जो उपयोगकर्ताओं को तेज डाटा स्पीड और ज्यादा विश्वसनीय कनेक्शन का वादा करता है, जैसा पहले कभी नहीं था। इससे उपयोगकर्ता कम समय में फोटो या वीडियो डाउनलोड या अपलोड कर सकेंगे। इससे दूसरे वायरलेस नेटवर्क के साथ संचार में लगने वाले समय में भी भारी कमी आएगी।

विश्लेषकों के मुताबिक, 4 जी से 5 जी की ओर जाना महत्वपूर्ण है। 1जी नेटवर्क ने जहां आवाज को सक्षम बनाया, वहीं 2 जी ने पाठ (टेक्स्ट) को, 3 जी ने तस्वीरों को और 4 जी ने वीडियो प्रसार को समर्थ बनाया है। इसलिए उम्मीद की जा रही है कि 5 जी से अधिक से अधिक उपकरणों को बेहतर स्पीड के साथ नेटवर्क से जोड़ा जा सकता है। 5 जी नेटवर्क से इंटरनेट ऑफ थिंग्स तकनीक में भारी वृद्धि होगी। सैमसंग का कहना है कि 5 जी फोन बीस गुना ज्यादा स्पीड वाला होगा। विशेषज्ञों का यह भी कहना है कि 5 जी उच्च गुणवत्ता के प्रसारण को सक्षम बनाएगा और लाइव कार्यक्रम देखने वाले दर्शकों के लिए बेहतरीन अनुभव साबित होगा। यह चालक रहित कारों के परिचालन, दूर से सर्जरी और होलोग्राफिक वीडियो कॉल को बेहतर बनाने में भी मददगार साबित होगा। इससे नगरपालिकाओं को ज्यादा प्रभावी ढंग से काम करने में मदद मिलेगी। नगरपालिकाएं निगरानी कैमरों को जल्दी एवं सस्ते में स्थापित करने में सक्षम होंगी।

# बाहर विलासिता, अंदर कट्टरता

**अमीरी के लिए ख्यात ब्रुनेई में व्यभिचार और गे सेक्स पर पत्थर मारने की सजा की घोषणा हुई है।**

**न्यूयॉर्क टाइम्स के लिए एलेन यूहास**

**ब्रुनेई** ने जब इस सप्ताह व्यभिचार और गे सेक्स पर पत्थर मारने की सजा मुकर्रर की, तो इससे 72 साल के सुल्तान हसनअल की ओर सहसा पूरी दुनिया का ध्यान गया, जिसकी अकूत संपत्ति और परिवार की शाहखर्ची दशकों से चर्चा में रही है। हाल के दशकों में सुल्तान ने अपने यहां कट्टर इस्लाम को लागू किया, जो उनके परिवार की शाही जीवन शैली के विपरीत है। ब्रुनेई के सुल्तान की आधिकारिक जीवनी के मुताबिक, वह सिर्फ वहां के राजा नहीं हैं, बल्कि प्रधानमंत्री, रक्षा मंत्री, वित्त मंत्री और विदेश मंत्री भी हैं। वर्ष 1961 में पंद्रह साल की उम्र में वह ब्रुनेई के शहजादा बने और 1968 में अपने पिता के हटने के बाद वह सुल्तान बन गए। उस समय ब्रुनेई की सुरक्षा की जिम्मेदारी ब्रिटेन पर थी। सुल्तान बनने से पहले हसनअल ने ब्रिटेन की मिलिटरी एकेडेमी से पढ़ाई की थी। उन्होंने मलयेशिया में भी पढ़ाई की।

जिस वक्त हसनअल ने अपने पिता की सत्ता संभाली, तब तक ब्रुनेई तेल के कारण बेहद समृद्ध हो गया था। वर्ष 1984 में आजादी के समय ब्रुनेई में प्रति व्यक्ति आय 48,650 डॉलर सालाना थी।

ब्रुनेई की समृद्धि का श्रेय ब्रुनेई शेल पेट्रोलियम जैसी सरकारी कंपनी को है। इसी कारण ब्रुनेई को शेलफेयर स्टेट भी कहते हैं। कोलंबिया यूनिवर्सिटी में वेदरहेड ईस्ट एशियन इंस्टीट्यूट में रिसर्च स्कॉलर एमी फ्रीडमैन कहते हैं, 'ब्रुनेई में लंबे समय से कट्टरपंथी और प्रतिबंध वाले नियम-कानून लागू हैं। 1990 के दशक में जब मलयेशिया और इंडोनेशिया जैसे देशों ने सामाजिक मोर्चे पर ज्यादा उदारवादी सोच का परिचय दिया, तब भी ब्रुनेई में धार्मिक क्रियाकलापों पर सत्ता का सख्त नियंत्रण था।'

दशकों तक ब्रुनेई के सुल्तान दुनिया के सबसे धनी व्यक्ति रहे और उन्होंने इसके अनुरूप खर्च भी किया। दुनिया में सबसे ज्यादा दुर्लभ कारें उनके पास हैं, जिनमें गोल्ड कोटेड एक रॉल्स रॉयस भी शामिल है। उन्होंने एक शानदार पोलो कॉम्प्लेक्स बनवाया। जबकि 1,788 कमरों का उनका महल दुनिया में सबसे बड़ा निजी घर है। अपने 50 वें जन्मदिन पर उन्होंने माइकल जैक्सन को आमंत्रित किया था।

सुल्तान के रिश्तेदार भी उतने ही शाहखर्च हैं। उनके बारह बच्चों में से एक शहजादा अब्दुल मतीन पोलो खेलते या बाघ के बच्चे को उठाए हुए या समृद्धि का प्रदर्शन करने वाली अपनी ऐसी ही तस्वीरें इंस्टाग्राम पर नियमित रूप से पोस्ट करते रहते हैं। सुल्तान के छोटे भाई शहजादे जेफ्री बोलकी एक शानदार पार्क बनवाने के अलावा, जिसमें पर्यटकों को मुफ्त प्रवेश मिलता है, दुनिया भर में होटल और महल खरीदने और उपपत्नियां रखने के लिए जाने जाते हैं।

उनकी खर्च करने की आदत इतनी ज्यादा है कि वर्ष 2000 में सुल्तान ने अरबों के खर्च का आरोप लगाते हुए उन पर मुकदमा किया। ब्रुनेई इन्वेस्टमेंट एजेंसी के पास, जो सरकार की ही कंपनी है, दुनिया के नौ बेहतरीन होटलों का मालिकाना हक है, जिनमें लास एंजेलिस के बेवरली हिल्स और होटल बेल एयर, लंदन के डॉरचेस्टर और पेरिस का होटल प्लाजा एथनी शामिल हैं।

**इस हफ्ते के शब्द**

### जस्टिन जिलेट

**इंडियाना के जस्टिन जिलेट ने अब तक 180 मैराथन में भाग लेकर हाल ही में मैराथन में अपनी सौवीं जीत हासिल की है।**

### फंटूश (FANTOOSH)

**हाल ही में इस शब्द को ऑक्सफोर्ड इंग्लिश डिक्शनरी में जगह दी गई है। इस स्कॉटिश शब्द का मतलब होता है- दिखावटी या भड़कीला।**

### दुनिया की हवा खराब

## 3.6 अरब

**लोग घर में होने वाले प्रदूषण से प्रभावित हुए वर्ष 2017 में दुनिया भर में, स्टेट ऑफ ग्लोबल एयर की रिपोर्ट के मुताबिक।**

**सूत्र**

>> बारबरा ब्रोकोली

# सर्वश्रेष्ठ प्रदर्शन के लिए जरूरी है बेहतर माहौल

**मेरा** जन्म जून, 1960 में हुआ। जेम्स बॉन्ड सीरीज की फिल्म बनाने वाले मशहूर फिल्मकार मेरे पिता अल्बर्ट आर ब्रोकोली थे। जेम्स बॉन्ड के पर्दे के पीछे की दुनिया में ही मेरा पालन-पोषण हुआ। मेरे आसपास हमेशा फिल्म निर्माण से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर चर्चा होती रहती थी। लास एंजेलिस में मैंने लोयोला यूनिवर्सिटी से मोशन फिक्चर और टेलीविजन कम्यूनिकेशन में डिग्री हासिल की। पहली बार बॉन्ड सीरीज की फिल्म में मैंने आधिकारिक रूप से *ऑक्टोपसी* में एक्जीक्यूटिव असिस्टेंट के रूप में काम किया। बाद में मुझे असिस्टेंट प्रोड्यूसर की जिम्मेदारी सौंपी गई। लेकिन 1995 में मेरे पिता ने मुझे और मेरे सौतेले भाई माइकल जे विल्सन को कंपनी की सारी जिम्मेदारी सौंप दीं। उसके बाद से हम दोनों ही अभिनेता चुनने, डॉयलॉग देखने, स्टंट सीक्वेंस तैयार करने और प्रचार तक का काम देखने लगे। बीच में एमजीएम कंपनी के मालिकों के साथ कुछ दुर्भाग्यपूर्ण सौदों के कारण बॉन्ड सीरीज की फिल्मों का प्रोडक्शन छह वर्षों तक अटका रहा। लेकिन जब उस मुकदमे का निपटारा हुआ, तो *बॉन्ड 17* (जिसका बाद में नाम *गोल्डन आई* पड़ा) ट्रैक पर थी और मेरे सामने बॉन्ड को बड़े पर्दे पर लाने की चुनौती थी। खैर, जब *गोल्डन आई* प्रदर्शित हुई, तो उसकी दुनिया भर में चर्चा हुई और अन्य बॉन्ड फिल्मों की तरह ही वह काफी लोकप्रिय हुई। यह सब इसलिए संभव हुआ, क्योंकि बचपन से ही मैंने फिल्म प्रोडक्शन की प्रक्रिया को अपनी आंखों से देखा था। कुछ लोग सोचते होंगे कि बॉन्ड जैसे प्रतिष्ठित किरदार पर फिल्म बनाना आसाना होता होगा, लेकिन ऐसा नहीं है। मुझे लगता है कि जो भी व्यक्ति फिल्म बनाता है, वह अपनी तरह के संघर्ष से गुजरता है। फिल्में बनाने के लिए लीक से हटकर असाधारण काम करना पड़ता है। शुक्र है कि मुझे हमेशा अपने पिता और भाई से आगे बढ़ने के लिए प्रोत्साहन मिला। इसने मुझे किसी भी परिस्थिति में आत्मविश्वास के साथ काम करने का हौसला दिया। मेरी सफलता का राज मेरे पिता का दिया यह मंत्र है कि एक निर्माता होने के नाते अच्छे लोगों को काम पर रखने और ऐसा माहौल तैयार करने की जरूरत है, जहां वे अपना सर्वश्रेष्ठ दे सकें। यह हमेशा मेरे दिमाग में कौंधता रहता है। मेरे सामने पहले की बॉन्ड फिल्मों की तरह लोकप्रिय फिल्म बनाने की चुनौतियां भी थीं और उसे बदलते समय के साथ प्रासंगिक बनाए रखने की भी।

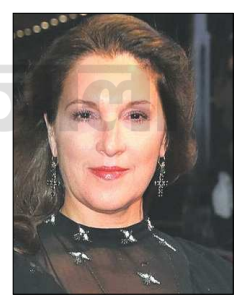

किसी भी काम में सफलता के लिए उसके विभिन्न पहलुओं की जानकारी और अच्छे सहयोगियों के साथ बेहतर कार्य-संस्कृति की जरूरत होती है।